









मीभम्हा-मुद्ध-मुद्धा-रुगवञ्चम्-पाभागाउ-भुलाभुग्व-मुत्रःस्न पी०भा मी-काष्ट्वी-काभकेष्टि-पी०भा एगम्हुरु-मी-मुद्धारणाट-भ्वाभि-मीभ०-मंभुग्नभा

॥नगमिन-एवर्ग-ए५-५५ वलभा॥

Announcement regarding japam/parayanam to be done on Narasimha Jayanti as directed by His Holiness Pujya Shree Kanchi Kamakoti Peetadhipati Shri Shankara Vijayendra Saraswathi Shankaracharya Swamigal.

For Vedic scholars, adhyapakas and vidyarthis:

- 1) After completing snanam, sandhyavandanam and other nitya karmanushthanam before 7 am on that day, the Narasimha Gayatri should be chanted 108 times.
- 2) The Narasimha Mahamantram "ugram veeram" should be chanted 1008 times.
- 3) This should be done before food. Senior citizens and children can take liquid food (buttermilk, kanji) without salt.

Others/women should do parayanam of Shri Narasimha Karunarasa (Karavalamba) Stotram by Shri Shankara Bhagavatpada three times in the evening on that day.

रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

Please do the mantra japam with sankalpam as given below and the stotra parayanam and receive the Grace of Guru and Lord Lakshmi Narasimha.

भद्रलुः

- ० उरानीं लेक भन्न प्रभु भार्भिक-रेग-विमेषमृ निम्निषभा उनुल नार्भा,
- ० मभ्म्म्-म्मीयानं विम्मीयानं ग्रापि भविभं वृाणि-रुय-नित्रुर्तं,
- ० भक्का ४-प्रिचेण इत् भक्का इस् मुरुका द्य-प्रिवन्न मृ उद्देगा प्रि-प्रिवन्न मृ उद्गाना वाः मृद्गिक-प्राम्द्रिम् परिकारा द्वं,
- भत्रिभं णितिक-मन्धानानं, भितिगितिष्ठगवः प्रष्ट-उद्भवानं य यमापृतं मीण्भिव प्राष्ट्रप्तभा,
- ० एन नं म्विया निवृद्धि- भुवक- भिष्वया मिरुवृद्धे,
- ० भाग्रनं णिद्मिकालं ग्र चैद-विम्नाम-पृष्टि-भिष्टुर्भा, मणिद्मक-मङ्गीनं विनामार्स्,
- उद्ग-प्रग भवलेक-बिभा ग्रं

नरभिन्न-गायर्गः मभ्रेत्रमय-मह्या नरभिन्न-भत्रगाएम् ए मभ्रेत्रमन्नम् सहया एपं किरिपृ।

॥मी-न भिंफ-ग यरी॥

र्षे वस्नापाय विम्मक डीकूमं भ्राय णीभिक। उन्ने नारिमकः प्रोम्याडा॥ रुर रुर मद्भर

॥मी-न भिष्ठ-भष्ठाभनुः॥

ममृ मी-नरभिंक-भकाभवृमृ नारम एषिः, मन्धूपो छन्ः, न भिंके मिवडा। मी-न भिंक-प्भाम-भिष्ठुर्र एप विनिधेगः॥

उग् वीरं भकाविष्कं स्वतं भवंडेभापभा।
न भिकं डीधणं डांद्र भड़ुभड़ं नभाभूकभा॥

काचिन वाग्रा भनमिति चैंता वृद्धा प्राज्य ना वा प्राः भ्रष्टा वा उत्ति। करोभि चम् उत्त भकलं परमी ना राचल्णचिं भभर वा भि॥



॥लक्ती-न भिंठ-करुण्यम-भुँउभा॥

म् भड़ा-पंचेतिण-तिकउत्र ग्रक्षणण रेगीत्-रेग-भण्य-गण्यः -पृष्य-भृतः । वेगीम माम्रुड मर्थः ठवाब्न-पेउ लक्ती-त् मिरु भभ मिरु करावलभूभाण।

र्क्निन्-रुद्-भरुद्ध-किरीए-केए-मद्धास्ट्रिट द्धि-कभलाभल-कान्ति-कान्। लक्की-लभर्ग-कुग्य-भर्गे रुठ-राष्ट्रंभ लक्की-न् भिरु भभ द्धि करावलभूभा॥॥

भंभार-म्य न-म्लाकर-छी-करें ह-द्वलावली छिर डिम्पू-उन्नह्नम् । इड्रा-पाम-पम्मभरभी मरल्लगउम् लक्ती-न् भिंक भभ में कि करावल भूभी॥॥

मंभार-एल-पिउरम् एग निवाम भन्ने निवाद्ग-गितमाग्-प्रधेपभम् । पेक्कित्र-प्रार-उल्क-भम्कम् लक्ती-निर्मेष्ठ भभ मिलिक करावल भूभो॥म॥

मंभार-कुपभित्रभेरभगाण-भुलं मभाप द्वाप-मउ-भर्त-मभाक्तम्। द्वीतम् द्विक्पया पद्दभागउम् लक्ती-तृ मिंक भभ द्विक करावलभूभा॥॥

मंभार-डीकर-करीत्-कराहिआउ-निषीहुभात-वप्षः मकलात्रि-ताम। प्राप्य-प्याप्य-ठव-डीडि-मभात्तलमृ लक्ती-तृमिंछ भभ म्हि करावलभूभा॥॥॥

मंभार-भर्-विध-िय्ग-भर्तेग्-डीव्-द्रंभ्ग्-केए-परिद्यम्-विनम्-भृरः । नागारि-वाठन भृणाष्ट्र-निवाम मेरि लक्ती-न् भिंठ भभ द्रोठि करावलभूभा॥॥ मंभार-त्वभभ-ग्रीस्भनतु-कर्म-मापा-वृडं कर्ण-पर्भनङ्ग-५५भा। गुरुष्ट म्शप-द्रलिउं पर्डे म्याले लङ्गी-न् भिष्ठ भभ म्लि करावलभूभा॥ऽ॥

भंभार-भागर-विमाल-कर्गल-काल-नक्-ग्र-ग्भिउ-निग्र-विग्रम् । वृग्म् राग-निग्रवेग्नि-निपीिष्ठउम् लक्ती-न्भिरु भभ मिर्क करावलभूभा॥७॥

मंभार-भागर-निभक्त-भृष्टभानभा द्वीनं विलेक्य विषेक्षण्य-निण्ने भाभा। प्राद्ध-पिद्ध-पिर्वाण्य-परावडार लक्ती-नु मिंक भभ द्विक्व करावलभ्रभा॥०॥

भंभार-भेर-गरुन गरंड भ्राम भारेग्-छीकर-भग-प्यामिडम् मुत्रम् भक्कर-निम्म् भ्रम् पिडम् लक्की-न् भिरु भभम्हि करा बल्वभूभा॥००॥

वसू गल यभ-रुए वक उत्त्यमः कर्ति यइ रुव-पाम-मर्डेग्-युउं भाभा। एक किनं प्रवमं एकिउं एयाले लक्ती-नुमिक भभ एकि क्रावलभूभा॥०९॥

लक्गी परं कभल गरु भ्रम विभू व्राप्त व्याप्त व

एकन ग्रम्भपरण करण मह्मभा मन्न भित्र-उनयाभा मवलभू उिश्वना। वाभेउरण वरमाध्य-पम्मग्रिकं लक्षी-न भिर्क भभ मिल करावलभूभा॥०म॥ रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

मन्नम् म रूउ-विवेक-भठा एनम् एउँगा-भठाव लिहिपिन् व-नाभएँ वैः। भेठा त्रका र-कुठाँ विनिधा दिउम् लक्षी-नुसिठ भभ ह्रिक करावल प्रभा॥०५॥

प्राम्पाद्य-परामर-प्राप्तीक-वृत्तमाद्य-रागवउ-प्राव-रुद्धिवाम । रुज्ञान्यज्ञ-परिपालन-पारिष्यउ लक्षी-न् मिरु भभ मेरिंड करावलभ्रमा॥०॥

लक्ती-न् भिंक-ग्राण्युक्त-भएव्डेन भेंड्रं न्डं मुरुकां रुवि मद्गाणा च उडा ५० नि भन्न क्रि-रुक्ति-च्काः डे चानि उडा-पप्त-मार्गणभापार-ग्रुपभाणाः ॥ ७ डि मीभम्बद्भार-रुगवश्चाद्य-विराग्डिं मी-लक्ती-न् भिंक-क्रण्णाम-भेंड्रं मभुक्रभा॥

